What is Socialism? Explain characteristics and forms.

समाजवाद (Socialism)

Topic - Socialism   VI   B.A. III (Hon's)
Paper - VI Section B

समाजवाद शब्द Socious से लिया गया है, जिसका अर्थ है, Society (समाज)। इस तरह समाजवाद का सीधा सम्बन्ध समाज से है। समाजवाद का जन्म पूँजीवाद के अन्तर्विरोध अर्थात पूँजीवाद के वर्ग में वर्ग-संघर्ष तथा शोषण की स्थिति के प्रति विद्रोह एवं प्रतिक्रिया के कारण हुआ। इस तरह समाजवाद पूँजीवाद का एक विकल्प है। अर्थात समाजवाद मानव का मानव द्वारा शोषण किये जाने का विरोधी है। समाजवाद एक बहुत व्यापक विचारधारा है, फिर भी समाजवादियों ने समाजवाद को परिभाषित करने का प्रयास किया है।

बर्ट्रैण्ड रसेल के अनुसार — "यदि हम भूमि और सम्पत्ति के सामाजिक स्वामित्व की बात कहें तो समाजवाद के मूल तत्व के अधिक निकट पहुँच जाते हैं।"

Dickinson के अनुसार — "समाजवाद समाज का एक ऐसा आर्थिक संगठन है, जिसमें उत्पादन के भौतिक साधनों पर सम्पूर्ण समाज का अधिकार होता है, तथा उसका संचालन एक सामान्य योजना के साथ ऐसी संस्थाओं द्वारा किया जाता है, जो सम्पूर्ण समाज का प्रतिनिधित्व करती है और सम्पूर्ण समाज के प्रति उत्तरदायी होती है। समाज के सभी सदस्य अधिकारों के आधार पर ऐसी सामाजिक कृत उत्पादन के लाभों के अधिकारी होते हैं।"

सन् 1923 ई० में बार्न्स तथा सलीमन्टो बेल ने समाजवाद के प्रमुख विशेषताओं पर जोर देते हुए लिखा है कि, "समाजीकरण का आवश्यक लक्षण यह है कि उद्योगों एवं व्यवसायों पर व्यक्तियों के स्वामित्व नहीं होना चाहिए तथा सामाजिक एवं औद्योगिक प्रशासन का संगठन व्यक्तिगत लाभ के दृष्टिकोण से नहीं करना चाहिए।"

उपरोक्त समाजवाद की परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि पूँजीवाद एवं समाजवाद में अन्तर करनेवाली प्रमुख बात व्यक्तिगत लाभ ही है। यदि पूँजीवाद में व्यक्तिगत स्वामित्व का स्थान दिया जाता है तो समाजवाद में सामूहिक स्वामित्व।

Scanned with CamScanner

जो। समाजवाद में उत्पादन के साधनों पर किसी एक व्यक्ति के अधिकार न होकर और समाज या राज्य का होता है। इन साधनों का प्रयोग किसी एक व्यक्ति के हित में नहीं बल्कि सामूहिक हित में किया जाता है। यदि पूँजीवाद राज्य को कम से कम कार्य सौंपता है तो समाजवाद राज्य को अधिक से अधिक। इस प्रकार समाजवाद की उपर्युक्त परिभाषाओं के विश्लेषण से इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ स्पष्ट होती हैं:—

(1) उत्पादन के साधनों पर सामाजिक स्वामित्व — समाजवाद का प्रधान विशेषता यह है कि इसमें उत्पादन के भौतिक साधन पर समाज का सामूहिक स्वामित्व होता है। इसमें व्यक्तियों के निजी सम्पत्ति का अधिकार होता है और साधनों का उपयोग भी व्यक्तिगत लाभ में किया जाता है। आर्थिक क्षेत्र में सभी निर्णय राज्य या राज्य द्वारा नियुक्त एक केन्द्रीय संस्था द्वारा लिये जाते हैं। इस प्रकार समाजवाद में उत्पादन के साधनों का स्वामित्व तथा नियंत्रण राज्य या समाज के हाथों रहता है और इसका प्रयोग राज्य के द्वारा ही सामूहिक रूप से जन कल्याण के उद्देश्य से किया जाता है।

(II) सामाजिक कल्याण की प्राप्ति :— समाजवादी अर्थव्यवस्था की दूसरी विशेषता सामाजिक कल्याण की प्रधानता है। इस प्रकार के अर्थ व्यवस्था में आर्थिक क्रियाओं [illegible] समन्वय [illegible] निर्देशन तथा उत्पादन [illegible] किया जाता है जिससे समाज [illegible] योजना के अनुसार [illegible]

है। समाजवाद [illegible] योजना बद्ध होती है। वैसे तो गैर समाजवादी व्यवस्थाओं में किसी न किसी तरह का नियोजन पाया जाता है, किन्तु समाजवादी व्यवस्था [illegible] होती है। इस प्रकार पूर्णतया नियोजित [illegible] समाजवादी अर्थव्यवस्था आर्थिक [illegible] नियोजन [illegible]

मुख्य व्यवस्था है। समाजवादी अर्थव्यवस्था में आर्थिक नियोजन का उद्देश्य किसी एक व्यक्ति का नहीं बल्कि सम्पूर्ण समाज का लाभ होता है।

(iv) शोषण का निवारण :- समाजवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन के साधनों पर सरकार का स्वामित्व होता है। अतः समाज के दो वर्गों पूँजीपति एवं मजदूरों में विभाजन नहीं होता। इसके अतिरिक्त उत्पादन समाजकल्याण के दृष्टि से किया जाता है। इस परिस्थिति में मजदूरों का शोषण नहीं होता है।

(v) आर्थिक समानता :- समाजवादी अर्थव्यवस्था का अंतिम विशेषता आर्थिक समानता है। इस प्रणाली में व्यक्तिगत सम्पत्ति और लाभोपार्जन की प्रवृत्ति के समाप्ति के कारण आर्थिक असमानता की सम्भावना कम हो जाती है। व्यक्तिगत सम्पत्ति तथा लाभोपार्जन की प्रवृत्ति की समाप्ति और आर्थिक समानता के जाने इस प्रणाली में वर्ग संघर्ष समाप्त हो जाता है और किसी भी व्यक्ति का व्यक्ति के द्वारा शोषण नहीं होता है।

Forms of Socialism

समाजवाद के निम्नलिखित प्रकार हैं।

(1) मार्क्सवादी या वैज्ञानिक समाजवाद — कार्ल मार्क्स द्वारा प्रतिपादित समाजवाद को मार्क्सवादी या वैज्ञानिक समाजवाद कहते हैं। समाजवाद के संबंध में मार्क्स के पहले कुछ विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किये थे। किन्तु मार्क्स ने ही सबसे पहले 1867 ई. में अपनी पुस्तक 'दास कैपिटल' में समाजवाद के सिद्धान्त को एक वैज्ञानिक आधार देने का प्रयत्न किया। अतः मार्क्सवादी समाजवाद को वैज्ञानिक समाजवाद भी कहते हैं।

मार्क्सवादी समाजवाद के प्रमुख दो अंग हैं-

(i) मूल्य का श्रम सिद्धान्त या अतिरिक्त मूल्य का सिद्धान्त

(ii) इतिहास के भौतिकवादी व्याख्या

(1) मूल्य का श्रम सिद्धान्त :- मार्क्स के इस सिद्धान्त के अनुसार किसी वस्तु का उत्पादन मजदूर द्वारा किया जाता है किन्तु उत्पादित

वस्तु के मूल्य के अपेक्षा मजदूरों को मजदूरी के रूप में बहुत कम मिलता है। इस तरह वस्तु के लागत का सारा अधिक्य तथा अतिरेक पूँजीपतियों के पास रह जाता है। मार्क्स के अनुसार यह मूल्य अतिरेक मजदूरों को मिलना चाहिए क्योंकि यह मजदूरों द्वारा ही उत्पादित किया जाता है किन्तु पूँजीपति इस सम्पूर्ण अतिरेक को हड़प जाते है और इस तरह मजदूरों का शोषण होता है। अतः मार्क्स ने पूँजीपतियों द्वारा कमाये जाने लाभ को लूट या शोषण कहा।

(1) इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या — इस सिद्धान्त के अनुसार सभी ऐतिहासिक घटनाओं के पीछे आर्थिक तत्व होते हैं। प्रत्येक देश में धनवान व्यक्ति गरीब का शोषण करते हैं और इस तरह वर्ग संघर्ष हमेशा चलते रहता है। प्राचीन काल में समाज कुलीन तथा गुलाम में बँटा था। उसी तरह मध्यकाल में भी गुलाम तथा जागीरदार या सामन्तवर्ग में बँटा था। इन वर्गों में प्रत्येक का हित एक दूसरे का विरोधी था जिससे आपस में संघर्ष होता रहता था, जिसके फलस्वरूप विभिन्न सामाजिक एवं राजनैतिक परिव... । किसी देश का इतिहास का लेखा उसका आर्थि... तथा आर्थिक संघर्षों का लेखा है। इस तरह मार्क्स ने समाजवाद के इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या की।

(2) सामूहिकवाद या राजकीय समाजवाद :- इस तरह के समाजवाद में उत्पादन के सभी साधनों पर राज्य का अधिकार होता है और यह सिद्धान्त वैधानिक लोकतंत्र में विश्वास रखता है। राज्य ही समस्त वस्तुओं तथा धन का उत्पादन करता है तथा इसका न्यायपूर्ण संगत वितरण करता है। इसमें निजी उपक्रम का अन्त हो जाता है। सारा उत्पादन राजकीय अधिकरणों द्वारा संचालित होता है। सामूहिक उत्पादन से जो लाभ होता है वह सरकार द्वारा जनता के हित में वितरित किया जाता है।

मार्क्सवादी समाजवाद और राजकीय समाजवाद में प्रधान अन्तर यह है कि मार्क्सवाद हिंसक क्रान्ति एवं विद्रोह द्वारा समाजवाद का स्थापना करना चाहता है जबकि राजकीय समाजवाद मार्क्स

के नाम सिद्धान्त को भी स्वीकार नहीं करता। राजकीय समाजवाद के अनुसार मूल्य सम्पूर्ण समाज की सृष्टि है केवल मजदूर वर्ग की नहीं अतः उत्पादन के साधनों पर राजकीय समाजवाद सम्पूर्ण समाज का अधिकार चाहता है। जिसका सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि राज्य है।

(3) **Fascism** :- Fascism प्रथम विश्व महायुद्ध के बाद मुसोलीनी के तानाशाही के अधीन इटली में देखने को आया। जर्मन में हिटलर का नाजीवाद बहुत कुछ इसी रूप में था। किन्तु Fascism तथा नाजीवाद दोनों अब समाप्त हो गये हैं। यद्यपि दोनों के दार्शनिक सिद्धान्त लगभग एक समान ही हैं। Fascism लोकतन्त्र के विरुद्ध है तथा राज्य को सर्वशक्तिमान बनाना चाहता है। इसमें व्यक्तिगत स्वतंत्रता का लोप हो जाता है। Fascism राज्य तथा राष्ट्र के शक्ति में वृद्धि करना चाहता है। इसमें उपभोग वस्तुओं के उत्पादन के बदले युद्ध सामग्री के उत्पादन पर जोर दिया जाता है।

(4) **श्रमिक संघवाद** :- इसका जन्म फ्रांस में हुआ। श्रमिक संघवाद श्रमिकों का एक क्रान्तिकारी संगठन है इसका उद्देश्य पूंजीवाद का विनाश तथा उसके स्थान पर उद्योगों को उत्पादकों के नियंत्रण का स्थापना है। श्रमिक संघवाद का विचार है कि श्रमिकों तथा पूंजीपतियों के बीच उत्पन्न स्वार्थ परस्पर विरोधी हैं तथा उनमें कोई समझौता नहीं हो सकता है। अतः श्रमिक वर्ग को अपने हितों की रक्षा के लिए तब तक पूंजीपतियों के विरुद्ध हमेशा संघर्ष जारी रखना चाहिए जब तक पूंजीवाद की इमारत ढह न जाए। श्रमिक संघवाद के अनुसार सरकारी अधिकारी अकुशल होते हैं तथा उनमें नौकरशाही की प्रवृत्ति होती है इसलिए उद्योग धंधों पर राजकीय अधिकार न हो। बल्कि प्रत्येक कारखानों पर श्रमिकों का अधिकार हो। अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए श्रमिक संघवादी हड़तालों तथा हिंसक तरीकों का उपयोग करते हैं। किन्तु श्रमिक संघवाद वर्तमान काल में बहुत अधिक लोकप्रिय नहीं है।

(5) **शिल्पसंघवाद** :- इस विचारधारा के उत्पादन के साधनों तथा उद्योगों का स्वामित्व तो राज्य के हाथ में रहते हैं किन्तु उनका प्रबंधन तथा संचालन प्रत्येक कारखाना

में काम करनेवाले सब प्रकार के मजदूरों का संघ के हाथ में रहता केवल कारखानों का निरीक्षण करता है। वस्तुओं का मूल्य निर्धारण करता है और उपभोक्ताओं को हित ध्यान में रखता है।

Criticism: लेकिन समाजवाद की आलोचना की गई है, जो निम्नलिखित है —

(I) समाजवादी अर्थव्यवस्था स्वतंत्र चालित मूल्य प्रणाली के अभाव में कुशलतापूर्वक काम नहीं कर सकती है। स्वतंत्र चालित मूल्य प्रणाली लाभोपार्जन प्रवृत्ति के अभाव के कारण समाजवादी व्यवस्था उचित नहीं लगता।

(II) समाजवादी अर्थव्यवस्था के विरुद्ध आलोचकों का यह कहना है कि इसमें उत्पादन और लाभ विशेष नहीं हो पाते।

(III) समाजवादी अर्थव्यवस्था के विरुद्ध एक प्रमुख आलोचना यह की जाती है कि इसमें उत्पादन कार्यों में आवश्यक प्रेरणा का अभाव पाया जाता है। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में निजी तथा व्यक्तिगत लाभ से प्रेरित होकर व्यक्ति उत्पादन के क्षेत्र में नये-नये आविष्कार करता है, उत्पादन के विधियों में परिवर्तन करता है तथा नयी-नयी उत्पादन के तरीके अपनाता है। किन्तु समाजवादी अर्थव्यवस्था में व्यक्तिगत लाभ के उद्देश्य से काम नहीं किया जाता है इस व्यवस्था में उत्पादन के कार्य में लगे व्यक्तियों में काम की प्रेरणा का अभाव पाया जाता है।

Conclusion: उपरोक्त आलोचनाओं के बावजूद भी यह निष्कर्ष कहा जा सकता है कि समाजवाद वस्तुतः सामाजिक और आर्थिक अव्यवस्था के विरुद्ध प्रतिक्रिया है, जिसे पूँजीवादी अर्थव्यवस्था ने उत्पन्न किया है।

Scanned with CamScanner